Research Paper | Humanities | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 6 | Issue : 6 | June 2020



PADMVIBHUSHAN JAGADGURU RAMANANDACHARYA SWAMI SHRI RAMBHADRACHARYA JI DWARA SHIKSHA EVAM DIVYANGO HETU PUNARVAS KE LIYE KIYE GAE KARYO KI SAMALOCHNA: EK ADHYAYAN

पदम् विभूषण जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्री रामभद्राचार्य जी द्वारा शिक्षा एवं दिव्यांगों हेतु पुनर्वास के लिए किये गए कार्यों की समालोचना : एक अध्ययन

Mukund Mohan Pandey[1] | Dr. Deepak Kumar Tripathi[2]

[1]शोध छात्र, नेहरु ग्राम भारती (मानित) विश्वविद्यालय, कोटवा, जमुनीपुर, प्रयागराज, इलाहाबाद उ.प्र., इन्डिया.

[2]असि. प्रोफेसर, नेहरु ग्राम भारती (मानित) विश्वविद्यालय, कोटवा, जमुनीपुर, प्रयागराज, इलाहाबाद उ.प्र., इन्डिया.

प्रस्तावना :

सृष्टि के आरम्भ से ही भारतवर्ष की इस पुण्य पावन धरा पर अनेक देवों ऋषियों, महर्षियों एवं महापुरुषों ने अवतरित होकर अलौकिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्पूर्ण मानवता को एक नवीन चेतना एवं दिशा प्रदान की है। अपने व्यक्तित्व एवं सदुपदेशों से चमत्कृत करते हुए इन महापुरुषों ने मानव जीवन एवं भारतीय संस्कृति का सतत् उन्नयन कर भारतीयता को गौरव के पद पर प्रतिष्ठित किया है। भारतवर्ष की इसी समृद्ध आर्ष परम्परा के ध्वजवाही, धर्म, धुरीण, सकल वेद वेदांगों, पुराणादि शास्त्रवेत्ता, वैदुष्य एवं प्रतिभा से सुसज्जित, सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक तथा राजनीति आदि विविध विषयों के सूक्ष्म, पारखी माँ शारदा के वरदपुत्र, सन्त मनीषी, साधक, समाजसुधारक, धर्माचार्य, पद्म विभूषित आदि अनेकानेक गुणों एवं व्यक्तित्व के पुंज एवं दिव्य आलोक का अवतरण 14 जनवरी 1950 को शाड़ी खुर्द जौनपुर (उ0प्र0) की पावन धरती पर हुआ। इसी अप्रतिम प्रकाश की किरणों से आज सम्पूर्ण जगत् की मानवता आलोकित एवं चमत्कृत हो रही है।

विश्व की इन्हीं विलक्षण विभूति को आज हम सभी भक्त जन प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद, परम श्रद्धेय गुरुवर श्री तुलसीपीठाश्वर धर्म चक्रवर्ती जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्री रामभद्राचार्य जी महाराज के रूप में पहचानते हैं।

आचार्य श्री के इसी लोकोत्तर चरित के किसी न किसी रूप से सम्पूर्ण जगत् प्रभावित होकर उनके श्री चरणों में श्रद्धावनत हो ठीक उसी प्रकार आनन्दित होता है जैसे अपने आराध्य देव के श्री चरणों में साक्षात् परमानन्द की प्राप्ति कर रहा हो। मानव स्वभावतः एक बौद्धिक प्राणी कहा गया है। इसमें भी आज का सुशिक्षित एवं प्रबुद्ध मानव किसी भी सन्त मनीषी या महापुरुष के व्यक्तित्व के सम्मुख नत नहीं होता। जब तक वह अपनी बौद्धिकता की कसौटी पर किसी भी बड़े से बड़े मनीषी को कस न ले अथवा महापुरुष के महनीय व्यक्तित्व की आलौकिता से अभिभूत न हो जाए। वास्तव में एक साधारण व्यक्ति से लेकर प्रबुद्ध, समर्थ एवं उच्च पदासीन व्यक्ति आचार्य श्री के असाधारण व्यक्तित्व के सम्मुख पहुंचते ही अभिभूत हो उनके श्री चरणों में सादर समर्पित हो जाता है।

इस प्रकार कठोर परिश्रम करके कोई भी व्यक्ति कुछ अध्ययन अध्यवसाय या ज्ञार्नाजन के द्वारा निश्चित वैदुष्य प्राप्त कर कतिपय विषयों का ज्ञाता, अध्येता या विद्वान बन सकता है। किन्तु समस्त वेद वेदांगों, उपनिषदों, पुराणों आदि समस्त शास्त्रों या अन्यान्य विषयों एवं ज्ञान विज्ञान का सम्यक् सूक्ष्म एवं सहज प्रवाहमय अप्रितम ज्ञान मात्र अध्यवसाय तथा कठोर परिश्रम के द्वारा नहीं अर्जित किया जा सकता है। सम्पूर्ण विद्या विशारद होने के लिए माँ शारदा की निबार्ध एवं अद्भुत कृपा होनी चाहिए साथ ही ईश्वर द्वारा प्रदत्त अलौकिक प्रतिभा का वरदान भी परमावश्यक है। आचार्य श्री के सन्दर्भ में उक्त कथन अक्षरशः सत्य सिद्ध होता है।

आचार्य श्री ने वस्तुतः इस धरती पर साधारण मानव के रूप में कदापि जन्म नहीं लिया है। वे तो एक महापुरुष युग पुरुष के रूप में ही जगत् समक्ष अवतरित हुए हैं। बाल्यावस्था से लेकर अद्यावधि पर्यन्त आपके कोई भी क्रियाकलाप जागतिक होते हुए भी अलौकिक दिखाई पड़ता है।

जन्म से दो माह बाद चर्मचक्षुओं का तिरोहित हो जाना किसी बालक के माता–पिता एवं परिवार के लिए कितनी अप्रिय एवं दुखद घटना है किन्तु आपके लिए तो यही अप्रिय एवं अभिशाप घटना वरदान सिद्ध हो गयी।

'kks/k dk i;ktu :

अपने शोध प्रयोजन में स्वामी रामभद्राचार्य जी के जीवन का प्रतिफल साधनामय था। वे अपनी दिनचर्या का एक पल भी व्यर्थ नहीं जाने देते हैं। अध्ययन, अध्यापन, लेखन, प्रवचन, व्याख्यान, शास्त्रचर्या, संगोष्ठी, दीनहीन विकलांगों की सेवा भक्तों, शिष्यों, परिवारों एवं साधु सन्तों से सम्मिलन उनकी समस्याओं का समाधान, देश विदेश यात्रा आदि विविध सात्विक संरचनात्मक गतिविधियों में दिनरात एक एक क्षण संलग्न आपकी व्यस्तता कर्मठता, सजगता को देखकर कोई भी व्यक्ति आश्चर्य चकित हो जाएगा, आपकी तपः पूर्ण दिनचर्या में जैसे आराम या विश्राम को कोई अस्तित्व ही नहीं है। बिना थके हारे उक्त कार्यों में सतत् संलग्नता के साथ–साथ भक्तों के मध्य आप सदैव हंसते, मुस्कुराते आनन्द करते दिखाई पड़ते हैं इसी आनन्द तरंग के बीच में ही कठोर व्याकरण, उपनिषद एवं अन्याय दार्शनिक ग्रन्थों पर गंभीर

शास्त्रीय चर्चा एवं लेखन भी आपका चलता रहता है। इसके लिए आपको एकाग्रता एवं एकान्त की कोई आवश्यकता नहीं होती है। यह सब आपकी अलौकिक साधना एवं तपश्चर्या का ही परिणाम है। जिसकी व्याख्या का शोध प्रयोजन रखा जाएगा।

'kks/k 'kh"kZd ls lEcfU/kr gq, 'kks/k dk;Z :

शोध छात्र उक्त शीर्षक से सम्बन्धित किये गए शोध कार्य पर ध्यान देकर आचार्य श्री की अलौकिक प्रतिभा, वाणी वैभव एवं अप्रितम वैदुष्य आदि सद्गुण मात्र श्रम साधना का ही सुपरिणाम नहीं है।

यदि श्रम साधना का मात्र सुपरिणाम होता तो न जाने कितने लोग श्रमपूर्वक इस ऊँचाई को प्राप्त करने में समर्थ हो जाते हैं। वस्तुतः आपके लोकोत्तर एवं विलक्षण व्यक्तित्व के पीछे प्रभु की अद्वैत की कृपा को शैशवावस्था से ही आपके जीवन में जो घटनाएं घटी वह कदापि सहज एवं स्वाभाविक नहीं रहीं।

सम्पूर्ण घटनाएं किसी अवतारी पुरुष के अवतरण का संकेत देती चली आ रही हैं। हम सभी सांसारिक लोग अपनी नग्न आंखों से सहज एवं प्रत्यक्ष दर्शन के कारण भले ही आपको मात्र एक सन्त धर्माचार्य, जगद्गुरु एवं लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान स्वीकार करें, किन्तु वस्तुतः स्थिति यह है कि हम सभी का सौभाग्यवश प्रभु की प्रेरणा से लोक कल्याण हेतु एक महामानव का इस धरती पर अवतरण हुआ है। समस्त शास्त्रों के ज्ञानी होते हुए भी आप मानस जी जैसे कोई दूसरा ग्रन्थ भारतीय वाड्.मय में स्वीकार नहीं करते। आचार्य श्री ने श्री रामकथा एवं मानस जी के अप्रितम ज्ञान एवं विशिष्ट शिक्षा के व्याख्यान एवं वैदुष्य ने आपको गोस्वामी तुलसीदास जी का एक मात्र ध्वजवाही बना दिया। सम्पूर्ण जगत् में विद्वान साहित्यकार एवं संतों तथा मनीषियों ने तो आपको गोस्वामी जी के अवतार के रूप में स्वीकार कर लिया है तथा अपने साहित्यों में इस तथ्य का निःसंकोच उद्घाटन भी किया है। उनके शोध ग्रन्थों से प्रेरणा लेकर इस शोध को सफल करने की कोशिक करुँगा।

शोध कार्य का औचित्य :

शोधकार्य का औचित्य स्वतः सिद्ध है क्योंकि आचार्य श्री के कार्यों एवं अन्ततः मैं स्वयं शोधार्थी के रूप में वैयाकरण वेदान्ती साहित्यिक नैषायिक धर्मशास्त्री, आशुकवि, गद्य गीत, नाटककार,. ऋग्वेद से लेकर हनुमान चालीसा पर्यन्त समग्र भारतीय वाड्.मय के प्रखर प्रवक्ता, संस्कृत के शतक कुशल धर्माचार्य निर्विरोध चित्रकूट तुलसीपीठ पर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पदासीन ब्रह्मचारी, ब्रह्मनिष्ठ, त्रिदण्डी वैष्णव एवं धर्म चक्रवर्ती, पदम विभूषण, आजीवन कुलाधिपति के भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्र भक्ति के प्रखर व्याख्याता श्री रामानन्दीय श्री वैष्णव परम्परा के महान एवं दिव्यांगों को मुख्यधारा में लाने का संकल्प को पूरा करने वाले महान जिनका एक परिकल्पना है।

शोधकार्य का महत्व :

आधुनिकता को देखते हुए इस शोध प्रबन्ध से समाज में आचार्य श्री के इस लोकोत्तर चरित्र को किसी न किसी रूप में सम्पूर्ण जगत् में प्रभावित होकर उनके श्री चरणों में श्रद्धावनत हो ठीक उसी प्रकार आनन्दित होकर जैसे अपने आराध्य देव के श्री चरणों में साक्षात् परमानन्द की प्राप्ति कर रहा हो। मानव स्वभावतः एक बौद्धिक प्राणी कहा गया है। इसमें भी आज का सुशिक्षित एवं प्रबुद्ध मानव किसी भी सन्त मनीषी या महापुरुष के व्यक्तित्व के सम्मुख नत नहीं होता। जब तक वह अपनी बौद्धिकता की कसौटी पर किसी भी बड़े से बड़े मनीषी को कस न ले अथवा महापुरुष के गहनीय व्यक्तित्व की आलौकिता से अभिभूत न हो जाये। वास्तव में एक साधारण व्यक्ति से लेकर प्रबुद्ध समर्थ एवं उच्च पदासीन व्यक्ति आचार्य श्री के असाधारण व्यक्तित्व के सम्मुख पहुंचते ही अभिभूत हो उनके श्री चरणों में सादर समर्पित हो जाता है।

लगभग 500 वर्षों के बाद भारतीय इतिहास में आचार्य श्री ही ऐसे एकमात्र धर्माचार्य एवं जगद्गुरु के रूप में अवतरित हुए हैं जिन्होंने श्रीमद्भागवत गीता, नारदभक्ति सूत्र, ब्रह्मसूत्र एवं अष्टादश उपनिषदों पर भाष्य लिखकर इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित करवा लिया है। आचार्य श्री से पूर्व आदि शंकराचार्य रामानुजाचार्य निम्बार्काचार्य आदि प्रमुख आचार्यों ने ही प्रस्थानत्रयी पर भाष्य लिखे हैं। आचार्य री ने श्रीरामचरितमानस, श्री मद्भागवत एवं पाणिनी की अष्टाध्यायी पर भाष्य लिखकर स्वयं को उक्त आचार्यों जैसे अग्रणी कर लिया है।

दृष्टिहीन, मूकबधिर, मन्दबुद्धि तथा अस्थि दिव्यांगों के प्रति चिन्तन करते हुए आपकी आंखे भर जाती है। अश्रुपूरित नेत्रों से गुरुदेव कहते हैं कि लगभग सात करोड़ दिव्यांगों को इस देश में है लेकिन आज तक किसी ने भी इनकी व्यवस्था एवं सुख सुविधा तथा शिक्षा दीक्षा पर कोई स्थान नहीं दिया। आप दिव्यांगों को अपना भगवान मानते हैं और दिव्यांगों की सेवा के लिए कृत संकल्प हैं। इसी तारतम्य में आपने चित्रकूट में प्रज्ञाचक्षु एवं बधिर उ0मा0 विद्यालय अथवा विश्व के प्रथम विकलांग विश्वविद्यालय की स्थापना करके दिव्यांगों के सपने को साकार किया है।

शोध प्रविधि :

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध कार्य हेतु ''पदम विभूषण जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्री रामभद्राचार्य जी के द्वारा शिक्षा एवं दिव्यांगों हेतु पुनर्वास के लिए गए कार्यों की समालोचना : एक अध्ययन से सम्बन्धित विविध ग्रन्थों का अध्ययन किया जाएगा

कार्यों से सम्बन्धित साहित्य का अनुशीलन करके इनकी विशेषताओं को प्रकाश में लाया जाएगा। अन्त में सभी तथ्यों को शोध प्रबन्ध के रूप में लिपिबद्ध कर आवश्यकतानुसार प्रस्तुत किया जाएगा। जो कि एक वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा।

शोध शीर्षक :
''पदम विभूषण जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्री रामभद्राचार्य जी द्वारा शिक्षा एवं दिव्यांगों हेतु पुनर्वास के लिए गए कार्यों की समालोचना : एक अध्ययन'' ।

जगद्गुरु रामभद्रचार्य जी की दिव्यांगों के प्रति अवधारणा :
उक्त चतुर्विधि विकलांगो को जगदगुरू रामभद्राचार्य विकलांग सेवा शिक्षण संस्थान चित्रकूट के माध्यम से विश्व के समस्त विकलांगों को आत्मनिर्भर, शिक्षित, सुसंस्कृत तथा विभिन्न मूल्यों से मूल्यवान बनाकर राश्ट्र एवं विश्व के मुख्य धारा से जोडने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास के अन्तर्गत उन्हें निःशुल्क आवास, भोजन, चिकित्सा, शिक्षण, उपकरण, पाठ्य सामग्री आदि उपलब्ध कराना है।

इस तरह से अध्ययन इस निश्कर्श पहुंचता है कि स्वामी रामभद्राचार्य जी एक कर्मयोगी संत है जिनकी दृश्टि ने मानवता ही एकमात्र धर्म तथा उसको उपासना ही मानव का परम कर्तव्य है। गवेशक मानवतोपासना के अन्तर्गत विकलांग सेवा के प्रेरणा जनक निम्नलिखित मत्र के अवतरण के साथ भाोध कार्य को पूर्ण करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

मानवता ही मेरा मंदिर, मैं हूँ उसका एक पुजारी।

है विकलांग महे वर मेरे, मैं हूँ उनका कृपा भिखारी।।

महामानव की ओर जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य

समकालीन भारतीय चिन्तन परम्परा में श्री अरविन्द ने मानव मनस् के जिन विभिन्न सोपानों का विवेचन किया है उसके अनुसार उन्होंने मनस्, उच्चतर मनस्, प्रदीप्त मनस्, अधिमानस एवं अतिमानस को चेतना की विभिन्न अवस्थाओं के रूप में स्वीकार किया है। अवस्था क्रम में अतिमानसिक अवस्था को श्री अरविन्द ने चेतना की पराकाष्ठा के रूप में स्वीकार किया,

जिसे दैवी चेतना या गीता वर्णित स्थितप्रज्ञ के रूप में भी स्वीकार किया जा सकता है। श्री अरविन्द ने सैद्धान्तिक दृष्टि से जिस अतिमानसिक चेतना को स्वीकार किया है व्यावहारिक दृष्टि से उसके मूर्तरूप वर्तमान युग में केवल जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य ही परिलक्षित होते हैं। स्वामी रामभद्राचार्य जी की उत्कृष्ट चेतना के परामनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक विवेचन से यह सुस्पष्ट होता है कि उनकी दिव्य चेतना में वे सभी लक्षण विद्यमान है जिसे श्री अरविन्द ने अतिमानस के प्रमुख लक्षण के रूप में दार्शनिक दृष्टि से स्वीकार किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ
1. स्वर्ण यात्रा–आचार्यदिवाकर शर्मा–श्रीतुलसीमण्डलगाजियाबाद
2. श्रीमद्भागवतगीता – जगद्गुरु रामभद्राचार्यजी – श्रीतुलसीपीठसेवान्यास, तुलसीपीठ, चित्रकूट, सतना (म0प्र0)(1998)
3. श्रीनारदभक्तिसूत्रेषु–जगद्गुरु रामभद्राचार्यजी–श्रीराघवसाहित्य प्रकाशन, निधिन्सास, वशिष्ठायनम्, हरिद्वार(1991)
4. ईशावस्योपरिषद् – जगद्गुरु रामभद्राचार्यजी – श्रीतुलसीपीठ, सेवान्यास, तुलसीपीठ, चित्रकूट, सतना (म0प्र0) (2000)
5. केनोपनिषद् – जगद्गुरु रामभद्राचार्यजी – श्रीतुलसीपीठ, सेवान्यास, तुलसीपीठ, चित्रकूट, सतना (म0प्र0) (2000)
6. कठोपनिषद् – जगद्गुरु रामभद्राचार्यजी – श्रीतुलसीपीठ, सेवान्यास, तुलसीपीठ, चित्रकूट, सतना (म0प्र0) (2000)
7. तुलसीसाहित्य में कृष्ण कथा – जगद्गुरु रामभद्राचार्यजी–
8. आजादचन्द्रशेखर – जगद्गुरु रामभद्राचार्यजी – श्रीराघवसाहित्य प्रकाशननिधि दसिष्ठायनहरिद्वार (1996)
9. राघवाभ्युदम्–जगद्गुरु रामभद्राचार्यजी– (वि0स0 2053)